ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 25-26

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

# नरसी के कृष्ण

**हर्षलता शाह**

असि0 प्रोफेसर विभागाध्यक्षा – हिन्दी विभाग,

श्री शंकरलाल सुंदरबाई शासुन जैन महिला महाविद्यालय टी.नगर, चेन्नई (तमिलनाडु), भारत

***सारांश :*** *हिंदी के भक्त कवि सूरदास की प्रसिद्धि के कारण जहाँ साहित्यकार उन्हें सूर कहते हैं, वहीं उनके ही समानांतर गुजराती कृष्ण भक्त कवि नरसिंह मेहता' को नरसी या नरसी मेहता के नाम से पुकारा जाता है। नरसी के आत्मपरक काव्यों के सूक्ष्म अवलोकन से मिले साक्ष्य से पता चलता है कि नरसी का जीवन परिवार, जाति, समाज, राज्य आदि सभी से उपेक्षित रहा था। परंतु हरि की दण्डी पकड़कर उन्होंने समस्त भौतिक यातनाओं को नकारना शुरू कर दिया। नरसी का समय सं. 1500 से 1600 के मध्य माना जाता है।*

***कुंजी शब्द–*** *प्रसिद्धि, सहित्यकार, समानांतर, सूक्ष्म, अवलोकन, दण्डी, आत्मपरक, समाज, राज्य, उपेक्षित ।*

नरसी के जन्म व जाति के विषय में कोई दो राय नहीं है। उनका जन्म भावनगर सौराष्ट्र के निकट तामाजा गाँव में हुआ था। उनके 'हार–प्रसंग' के पदों तथा 'सामलदास नो विवाह' में उनके नागर होने का उल्लेख मिलता है। जैसे जात नागर थाकी रहे घणु बेगलो, भगत ऊपर घणु भाव राखे।

पिता कृष्णदास की ढ़लती उम्र की संतान थे नरसी। तीन साल की उम्र में ही पिता का देहावसान हो जाता है और माता दयाकोर उन्हें लेकर काका पर्वतदास के यहाँ चली जाती है। एक भाई थे जिनका नाम वंशीधर था। माता बालक नरसी को कृष्ण कथाएँ सुनाया करती थीं। आगे चलकर इन्हीं संस्कारों ने नरसी को गुर्जर धारा का परम–वैष्णव बनाया। कहा जाता है कि भाभी के उपालंभों से तंग आकर वे अपनी पत्नी के साथ जूनागढ़ बस गये, जहाँ उन्हें दो संतानें हुई। एक पुत्र सामलदास और एक पुत्री कुंवरबाई।

नरसी का जीवन बहुत कठिनाई पूर्ण था, उनकी वैष्णव भक्ति के कारण उन्हें उनकी जाति व समाज के लोगों का विरोध सहन करना पड़ा। परंतु भगवद् भक्ति के कारण उनके जीवन में कुछ घटनाएँ ऐसी हुई जिसके कारण उनकी भक्ति की छाप जन–मन पर पड़ने लगी। उनके जीवन में घटी कई घटनाएँ जैसे झारी, मामेरूँ, सामलदास नो विवाह, हुँडी, हार। उनकी रचनाओं जैसे हारसेमना पद अने हारमाला, सामलदास नो विवाह, मामेरूँ, हुँडी और अन्य स्फुट पदों में उपरोक्त घटनाओं का जिक्र यदा–कदा देखने को मिलता है।

कृष्ण–कीर्तन ही उनका जीवन था। वे कृष्ण को परस्पर ब्रह्म मानते हुए उनके चरणों में ही स्वयं को समर्पित कर देते थे। वे स्वयं इसे मानते हैं–

**"श्यामनां चरण मा इच्छु छुं मरण रे।"**

कृष्ण भक्त होने के कारण वे एक संप्रदाय भक्त थे। एक बार किसी शूद्र के यहाँ भजन–कीर्तन करने के अपराध में उनका जाति बन्धुओं ने जाति–व्यवहार बंद कर दिया था। नरसी के सामने ही उनकी पत्नी एवं युवा पुत्र सामलदास का अवसान हो गया था। 'हारमाला' प्रसंग में अपना मृत्युकाल सन्निकट देखकर नरसी अपनी पुत्री को सान्त्वना देते हुए कहते हैं–

**"मात तारी रे, हरि ने जइ मली रे, भ्रात श्रीकृष्ण ने पाम्यो शरण।**
**चरण वलुंध्यो रे, कुंवरी हुँ रह्यो रे, आज आ काले भूडुं मरण"**

भगवद् सेवा ही भक्ति है। कई उत्तर भारतीय भाषाओं का कृष्णकाव्य भक्ति की अनेक व्याख्याओं की आधार–भूमि पर फला–फूला है। हिंदी के सूर व गुजराती के नरसी का भक्तिकाव्य भी भगवान के माहत्म्य एवं स्नेह की उत्कट भावभूमि पर ही आधारित है। नरसी के कृष्ण काव्य में भक्ति के माहात्म्य का वर्णन है। उनके अनुसार सांसारिक दुखों की निवृत्ति तथा परमानंद के मार्ग पर प्रवृत्ति के लिए प्रेमाभक्ति ही महान है। नरसी के अनुसार कृष्णभक्ति हीन मनुष्य भ्रमित है।

"जे कुल हरि नी भक्ति न साधी, ते अपराधी जीव कशारी, भूतल भार भरे शव सरखा, जीवतड़ा नर नरक वस्यारी" नरसी ने कृष्ण के कई रूपों में भक्ति की है जिन्हें क्रम सहित उदाहरणों के साथ देखना अधिक उचित होगा। सूर की तरह नरसी में भी दास्य भाव है। सूर ने एक स्थान पर कहा है–

**"जाको हरि अंगीकार कियो।**
**ताके कोटि विघन हरि हरिकै, अभै प्रताप दियौ।"**

वही नरसी ने कहा है–

**–"चिंता सोंपो रे, श्रीहरि ने रे, करशे भक्त ने सहाय।"**
**–"ध्यान धर कृष्णनुं राख मन कृष्ण शुं, सार करशे नरसहींयाचो स्वामी।"**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

परंतु दोनों की दास्य भक्ति में जमीन–आसमान का अंतर है। जहाँ सूर में ज्यादा दास्य भाव सूरसागर में है, वही नरसी के दास्य भाव भक्ति–ज्ञान के पदों में विकीर्ण रूप में मिलते हैं। सूर ने स्वपापों के विनाश से आत्म उद्धार की बात कही है वहीं नरसी में ऐहिक दुखों से मुक्ति का भी भाव है।

सख्य भक्ति में भक्त अपने भगवान से निःस्वार्थभाव से प्रेम करता है और वह किसी शर्त पर न बंधकर निष्कपट भाव से होता है। नरसी में दान, गोचारण, बाल लीला विषयक कुछ पदों में यह भाव देखने को मिलता है। उनके पदों में कृष्ण भी सखाओं के लिए तरसते दिखते हैं–

**"एक एकनां भाता छोड़ी, लइ हरि भागल्य दाखे।**
**नाना विधनां शाकशपूँलां ते लक्ष्मीवर चाखेध"**

वात्सल्य भक्ति ऐसे बहाव की भक्ति है जो निस्वार्थ होती है। यह पुत्रादि को छोड़कर अलौकिक बालकृष्ण को आलंबनों द्वारा अभिव्यक्त करती है। वात्सल्य भक्ति में भक्त अपने को माता–पिता के स्थान पर रखकर भगवान के बाल–रूप को मानने लगता है।

अष्टछाप कवियों में सूर को वात्सल्य–भक्ति का श्रेष्ठ कवि मानते हैं। नरसी में इस भक्ति के पद बहुत कम और लगभग केवल तीस ही देखने को मिलता है। नरसी ने कृष्ण के भोलेपन का वर्णन किया है–

**आँखें, आसूँ ढ़ले, इंदु देखी चले, टलवले माता ने मान माँगे।**
**रेहे रेहे रोतो शुँ रे जो तो घणुँ रमवा रमकडां छे रे बाहे आगे।"**

मधुर–भाव भक्ति ऐसी है जिसमें अपने इष्टदेव के साथ जितना नैकट्य स्थापित किया जा सकता है उतना दास्य, सख्य भाव में नहीं। काव्यशास्त्र में जो स्थान श्रृंगार का है,वहीं भक्ति में मधुर रस का। कृष्ण भक्त अपने समस्त चक्षु, कर्ण, जिह्वा, त्वचा आदि को कृष्ण की मधुर भक्ति में समा लेना चाहता है। मधुर भक्ति में वियोग–भाव एक अलग महत्व रखता है।

**"कंस ने घेर दासी रे, पेली कूब्जा रे,**
**सुंदर शामलीयो भरथार**
**नरसैंया नो स्वामी रे, सखि भुने मल्यो रे,**
**व्हाला मारा आवागमन निवार।"**

कहते हैं नरसी ने शिव–भक्ति से कृष्ण को प्राप्त किया इसीलिए वे कृष्ण और शिव के बीच भेद कतने वालों को अधम की संज्ञा देते हैंः

**"गंगाधर ने गोकुलपति विचि जे की आणे भेद,**
**भने नरसैंओ वैष्णव नहि ते, अधम तेहि किहि वेद।"**

नरसी की भक्ति में सत्संग का बहुत महत्व है। नरसी ने उन सभी का त्याग करने को कहा है जो भगवद् भक्ति में बाधक हैं–

**"नारायणनुं नाम ज लेता, वारे तेने तजीये रेय**
**मनसा वाचा कर्मणा करीने, लक्ष्मीवर ने भजीये रेध**
**कुल ने तजीये, तजीय मा ने बाप रेय**
**भगिनि सुत दारा ने तजीये, जेम तजे कंचुली साप रे।"**

गाँधी जी द्वारा गाये जाने वाले एक वैष्णव–भजन में नरसी ने भक्त की प्रशंसा में कहा है–

**"वैष्णव जन तो तेने कहिये, जे पीड़ पराई जाणे रे।**
**पर दुःखे उपकार करे तो ये, मन अभिमान न आणे रे।**
**सकल लोकमां सहुँने वंदे, निंदा न करे केनी रे।**
**वाच काछ मन निश्चल राखे, धन–धन जननी तेनी रे।"**

*****